भक्तिकालीन काव्य का सांस्कृतिक अवदान

डॉ. बलबीर सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोतर हिंदी विभाग

दयाल सिंह कालेज, करनाल, हरियाणा, भारत

शोध आलेख सार: *संस्कृति किसी भी सभ्य समाज का परिष्कृत रूप है। किसी भी समाज अथवा देश की सही पहचान उसकी संस्कृति से होती है। संस्कृति का निर्माण समाज अथवा देश के सामाजिक राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं नैतिक जीवन मूल्यों के आधार और संस्कार में निहित होती है। संस्कृति में सदैव एक सभ्य विचार विद्यमान रहता है बिना सभ्य विचार के संस्कृति की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती। असभ्य विचार को संस्कृति कभी भी स्वीकृति नहीं देती। ''संस्कृति कभी किसी कच्चे विचार को स्वीकार नहीं करती। संस्कृति हमेशा परिमार्जन, परख और परिशोधन के बाद किसी विचार और व्यवहार को सांस्कृतिक दर्जा देती है।''[1] हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग भक्तिकाल मध्यकालीन भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण विचारधारा है। यह सांस्कृतिक विचारधारा सीधे तौर पर भारतीय संस्कृति का मुख्य स्रोत है। डॉ. ओम प्रकाश सारस्वत के मतानुसार–''हमारी संस्कृति गुण या मूल्य हैं– दया, प्रेम, करूणा, सहानुभूति, सत्य, अहिंसा, परोपकार, आस्था, श्रद्धा, क्षमा, उदारता, विश्वबंधुत्व की भावना, त्याग एवं संयम तथा सदाचार आदि''[2] इन सांस्कृतिक मूल्यों को व्यक्ति के भाव–विचार तथा व्यवहार से अभिव्यक्ति मिलती है। यही सांस्कृतिक मूल्य हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में प्रचूर मात्रा में मिलते हैं।*

मुख्य शब्दः भक्तिकाल, काव्य, निर्गुण, सगुण, समाज, धर्म, योग, संस्कृति।

Article History

Received: 04/04/2025; Accepted: 12/04/2025; Published: 18/04/2025

ISSN: 3048-717X (Online) | https://takshila.org.in

Corresponding author: डॉ. बलबीर सिंह, Email ID: drbalbirsinghdsc@gmail.com

Improving Skillset

Takshila Journal of Research

भक्तिकालीन काव्य में निर्गुण और सगुण भक्ति का एक अद्भुत समन्वय है। भक्ति की निर्गुण काव्यधारा में संत और सूफी काव्य की चर्चा है, वही रामकाव्य और कृष्णकाव्य धारा सगुण भक्तिकाव्य की सांस्कृतिक धाराएं हैं जिनमें काव्य का उत्कृष्ट रूप परिलक्षित होता है। ''संतकाव्य पूर्ववर्ती आदिकालीन सिद्ध साहित्य का विकसित रूप कहा जा सकता है, परन्तु संस्कृति दृष्टिकोण से दोनों काव्यधाराओं में एक तात्विक अंतर है। सिद्ध जहाँ प्राचीन भारतीय चिन्तनधारा के प्रमुख स्त्रोतों वेद, पुराण तथा उपनिषदों से विभिन्न है वही संत साहित्य इसी चिंतनधारा के एक वेदांत को किसी न किसी रूप में ग्रहण करके चलता है।''[3] संत काव्य

के प्रवर्तक कवि कबीरदास ने वेदांत के मूलभूत अद्वैतवाद को अपनाया। कबीरदास भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों और पाखंडो के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने भारतीय धर्म और सांस्कृतिक विचारधारा के दूषित तत्वों जैसे अंधविश्वास, जातिवाद, छुआछूत, जादू– टोना, बाह्याडम्बरों तथा धार्मिक कर्मकाण्डों का डटकर विरोध किया और समाज से इन कुरीतियों को उखाड फैंक कर भारत समाज और संस्कृति के परिष्कृत रूप अपनाने पर बल दिया। संत कवि के कवि नहीं थे बल्कि वे सच्चे अर्थों में समाज सुधारक थे। हिंदू–मुस्लिम संस्कृतियों के धार्मिक प्रदूषण को समाप्त कर वे समाज में प्रेम एवं एकता के पक्षधर थे। इसी संदर्भ में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि ''संभवतः कबीर का जन्म योगियों के किसी सद्यः धर्मांतरित परिवार में हुआ था और इसलिए इस्लामी सूफीवाद में गति के साथ योगियों के परम्परागत संस्कार भी उनमें जन्मना बद्धमूल थे।''[4]

कबीरदास हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति सांझे कवि है और दोनों संस्कृतियों में फैले कर्मकांड, पाखंड, जातीय–भेद, ऊंच–नीच आदि सामाजिक विकारों के विरोधी भी रहे । इसी प्रकार संत काव्य अन्य कवियो में संत रविदास, दाद्दयाल, रज्जबदास, मूल्क दास, धन्ना, पीपा और सेन आदि ने जाति–पाति जैसी क्रुर भावनाओं का खुलकर विरोध किया और भारतीय संस्कृति के समतावाद का प्रचार–प्रसार किया फलस्वरूप उन्हें कट्टर मौलवियों और पांगा पंडितों का विरोध भी सहना पड़ा । परंतु कबीरदास और रविदास ने 'ब्राहमणवाद'के गढ़ काशी में बैठकर यह सब कहना शेर की मांद में जाकर उसे ललकारना या फिर उसके मुंह में हाथ डालने के समान था। संतों ने हिंदू और मुस्लिम दोनों ही धर्मों के अनुयायियों की आंख में अंगली डालकर उनसे बातें की। यदि कबीर साहब हिन्दुओं की मूर्तिपूजा को प्रश्नांकित करते है। तो मुस्लमानों के रोजा और नमाज पर भी अंगली उठाते है।''[5]

वे कर्मकांड की भयवहता और कट्टरता की कुतिलता को खत्म कर समाज में सद्भाव और परोपकार की भावना पर बल देते है। भारतीय संस्कृति की उदारता और उच्चता का सर्वश्रेष्ठ रूप प्रदान करना ही संतकाव्य का प्रथम सोपान है। भक्तिकालीन काव्य की निर्गुण काव्य परंपरा की दूसरी काव्यधारा ''सूफीकाव्य'' के नाम से जानी जाती है। इस काव्यधारा का आधार लौकिक एवं अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति है। ''हिन्दू–मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने के कार्य में सूफी काव्य धारा के कवियों का विशेष योगदान है। सूफी कवियों ने अपने ग्रंथों में हिंदू परिवारों में प्रचलित प्रेम कहानियों को कथानक के रूप में चुना।''[6] भारतीय समाज और संस्कृति में तीज–त्योहार, खान–पान, वेश–भूषा–रहने–सहन, आस्थाएं, विश्वास रीति–रिवाज, पूजा–पद्धतियां, खेल–मेल, रस्में और कस्में एक मूलभावना और मूलभूत तत्वों के रूप में विख्यात हैं।

सूफीकांव्य के मुस्लमान कवियों ने भारतीय समाज में रहकर हिंदू संस्कृति और समाज का बहुत ही सुन्दर चित्रांकन किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं मे हिंदू राजा–रानियों की प्रेम कहानियों को आधार बनाकर कालजयी रचनाओं का सृजन किया। मलिक मुहम्मद जायसी सूफी काव्य के प्रवर्तक कवि है और अपने महाकाव्य 'पद्मावत' में हिन्दू संस्कृति के तत्वों का स्वाभाविक चित्रण करते है। हिंदू–मुस्लिम संस्कृतियों का मणिकांचन समन्वय सूफी काव्य का एक सराहनीय प्रयास है, जिसमें प्रेम, त्याग और सदभाव की भावना सर्वोपरि है। हिंदू–मुस्लिम संप्रदायों के बीच की साम्प्रदायिक खाई को पाटने का कार्य सूफी कवियों अपने काव्य बेखूबी किया है। मलिक मुहम्मद जायसी जैसे विश्व कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और संवरने के साथ–साथ सांस्कृतिक विविधता में समरस्ता को स्थापित करने उदात कार्य किया है।

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण परंपरा में रामकाव्य धारा के सर्वमान्य प्रवर्तक कवि है। रामकाव्य परंपरा भारतीय संस्कृति का पर्याय माना जाता है। भारतीय संस्कृति और साहित्य के इतिहास में तुलसीदास का समन्वयवादी दृष्टिकोण उन्हें विश्व कवि के रूप में स्थापित करता है। तुलसीदास के राम सत्य, शील, सौदर्य और शक्ति के प्रतीक हैं। रामचरित मानस न केवल तुलसीदास की ख्याति का आधार स्तंभ हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति का आधार ग्रंथ भी है। ''तुलसी ने अपने रामचरित मानस के द्वारा नवजीवन का संचार किया। राम के आदर्श परिवार के चित्रण से तुलसी ने वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के क्षेत्रों में जिस मर्यादावाद की प्रतिष्ठा की वह नितांत स्पृहणीय है''[7] संयुक्त परिवार और कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना है। एक दूसरे की भावनाओं की कद्र करना संयुक्त परिवार की प्रथम पहचान है। पिता की आज्ञा का पालन पुत्र का परम कर्तव्य है। संपूर्ण काव्य आदर्शवाद और लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण है। जिसमें एक आदर्शवादी समाज की कल्पना की है। भारतीय परिवार, समाज और संस्कुति की पराकाष्ठा रामकाव्य की धरोहर है। जहाँ आदर्श पति, आदर्श पत्नी, आदर्श माँ, आदर्श पिता, आदर्श भाई, आदर्श मित्र, आदर्श सेवक, और आदर्श दुश्मन के चित्रण माध्यम से सामाजिक मर्यादाओं की स्थापना की है। भक्तिकाल का रामकाव्य सांस्कृतिक गुणों भण्डार है तुलसी के राम के आदर्शों का अनुकरण भारतीय संस्कृति के समर्थकों और उन्नायकों का सदा से लक्ष्य रहा है। भारतीय संस्कृति में संस्कारों की महती भूमिका है। ''संस्कारों से भी संस्कृति प्रभावित होती है। यह संस्कार किसी एक निश्चित देश किसी काल खंड में जन्म लेने वरन यह कब जन्म लेते हैं। यह ज्ञात नहीं होता है। प्रत्येक काम ही हम संस्कृति नहीं कहते पर जिनके कामों के किसी देश विशेष के समस्त समाज पर अमिट छाप सी लग जाती है। वह छाप ही अंत में उस देश अथवा उस देश के निवासियों की संस्कृति बन जाती है। भारतीय संस्कृति भी संस्कृति के इस नियम से रहित नहीं हैं। भारतीय संस्कृति के स्वर्ण युग को रामायण काल मानते हुए सम्पूर्ण भारतीय

संस्कृति की झलक रामायण काल में देखी जा सकती है।''[8] राम काव्य ने मनुष्य मात्र की रूप, गुण, शील, शक्ति और सौंदर्य के प्रति सहज लालसा की पूर्ति राम के आदर्श रूप को प्रस्तुत करके की है''[9]

कृष्ण काव्य सगुण भक्ति का चरमोत्कर्ष है। कृष्ण काव्य के सूर्य सूरदास ब्रज संस्कृति के माध्यम से भारतीय संस्कृति को स्थापित करने में पूर्णतः सफल रहे हैं। सूरदास के साथ–साथ अष्टछाप के अन्य कवियों जैसे कुंभनदास, परमानंद दास, गोबिन्द स्वामी, नंददास के काव्य में कृष्ण के अमूर्त रूप में भी मूर्त स्वरूप दिखाई देता है। नटनागर श्रीकृष्ण और राधा का प्रेम केवल शारीरिक नहीं बल्कि प्रेम की उदात्तता की चरम सीमा है। विरह प्रेम की कसौटी है, जिसमें केवल सादगी और निश्छलता है जो मानव मन को उर्ध्वगामी बनाकर प्रेम की सात्विकता के दर्शन करवाती है। प्रेम तत्व मानव मन में दया, सद्भावना और करूणा का स्त्रोत है। यही दया, सद्भावना और करूणा भारतीय संस्कृति के उदात तत्व है।

ब्रज संस्कृति कृषि आधारित संस्कृति है जिसमें पशुपालन अर्थव्यवस्था की मूल धूरी है। पशु–प्रेम भारतीय संस्कृति का एक मूल तत्व है जो मनुष्य में न केवल मानव के लिए करूणा के सागर को उडेल देता है बल्कि गो–माता के लिए प्रभु श्रीकृष्ण का असीम प्रेम मानवता में पशुता के प्रति सौहार्द की पराकाष्ठा है। ब्रज क्षेत्र के गीत–संगीत, तीज–त्योहार, रीति–रिवाज, विश्वास–आस्था और जीवन मूल्य सम्पूर्ण मानवता की पहचान है। कृष्ण काव्यधारा के कवियों ने भारतीय संस्कृति के पोषण और संवर्धन में महती भूमिका निभाई है।

निष्कर्षः अतः कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य का भक्तिकाल न केवल साहित्य का स्वर्णयुग है, बल्कि भारतीय संस्कृति का भी स्वर्ण युग है, जिसमें सांसारिक तत्वों की उदात्तता, श्रेष्ठता, सद्भावना और सात्विकता निहित है। दया, प्रेम, करूणा, सहनशीलता, सहयोग, भाईचारा, विश्वबंधुत्व, सौहार्द्र, परोपकार, उपकार और मानवतावाद भारतीय संस्कृति के विशिष्ट गुण माने जाते हैं। भक्तिकालीन साहित्य की आरम्भ से ही भारतीय संस्कृति संरक्षण और संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका है। भक्तिकाल भारतीय संस्कृति के उच्चतम मूल्यों और आदर्शों का अद्भुत समन्वय है। संतकाव्य निर्गुणवाद की स्थापना समाज सुधार की भावना, और सामाजिक मानवीय मूल्यों के आधार पर करता है, जिसमें पाखण्डवाद का विरोध है। सूफीकाव्य लौकिक एवं अलौकिक प्रेम की सात्विकता और उदात्तता को आधार बनाकर भारतीय संस्कृति को विश्वव्यापी बना देता है, जिसमें प्रेम में परमात्मा के दर्शन निहित है। रामकाव्य भारतीय सांस्कृतिक अवदान का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। श्रीराम गुणों की खान हैं। जिसमें प्रत्येक भारतीय अपना अस्तित्व पाने की चेष्टा करता है। श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन कृष्णकाव्य धारा की विशेष प्रवृति है। जिसमें वात्सल्य अपनी चरम पर है। वस्तुतः भक्तिकाल न केवल साहित्यिक दृष्टि से स्वर्णयुग माना जाता है बल्कि भारतीय

सांस्कृतिक अवदान में भक्तिकालीन काव्य में एक विरासत है जो सम्पूर्ण विश्व को प्रेम, प्यार, सौहार्द्र, भाईचारा और विश्वबंधुत्व का पाठ सिखाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. एकांत श्रीवास्तव हिंदी साहित्य और संस्कृति (लेख) वागार्थ (पत्रिका) पृष्ठ–36 अक्टूबर 2008, कोलकता
2. डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत : बदलते मूल्य और नाटक, पृष्ठ–78
3. निर्मल सिंह : भारतीय संस्कृति एवं हिंदी साहित्य, पृष्ठ–85
4. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य की भूमिका, पृष्ठ–121
5. डॉ. अशोक कुमार निराला : निर्गुण संत साहित्य की वर्तमान प्रासंगिकता पृष्ठ–89
6. निर्मल सिंह : भारतीय संस्कृति एवं हिंदी साहित्य, पृष्ठ–86
7. डॉ. शिव कुमार शर्मा : हिंदी साहित्यः युग और प्रवृतियां, पृष्ठ–310
8. डॉ. डी.एस. भण्डारी : रामकाव्य में वर्णित हिंदू संस्कृति और नारी आदर्श पृष्ठ–285
9. डॉ. शिव कुमार शर्मा : हिंदी साहित्यः युग और प्रवृतियां, पृष्ठ–310

Improving Skillset
Takshila Journal of Research